(B.A. I) स्नातक प्रथम खंड हिन्दी प्रतिष्ठा

पिछले दिनों का सारांश

डॉ० सतीश चन्द्र पाठक, हिन्दी विभाग
एस०एम० कॉलेज, भागलपुर।

पिछली कक्षा में हमने प्रबंध काव्य ~~एवं मुक्तक काव्य~~ के सम्बन्ध में जाना। आज हम मुक्तक काव्य के सम्बन्ध में जानकारी लेंगे। जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि मुक्तक काव्य मोती की तरह स्वयं में पूर्ण एवं संक्षिप्त होता है। उसमें पूर्वापर के सम्बन्ध की अपेक्षा नहीं होती। मुक्तक काव्य के अनेक भेद हैं-

(i) गीत - सुख-दुख की भावावेशमयी अवस्था को गिने-चुने शब्दों में स्वर साधना के अनुरूप चित्रित कर देना गीत है।

इस परिभाषा से स्पष्ट है कि गीत में भावावेशमयी अवस्था का चित्रण होता है। साथ ही संक्षिप्तता होती है तथा गेयता अर्थात् गाने योग्य - स्वर साधना के अनुकूल होता। विद्यापति ने अनेक गीतों की रचना की है जो आज भी मिथिलांचल में प्रचलित एवं लोकप्रिय है।

(ii) सूक्तियां - जीवनोपयोगी एवं समाजोपयोगी तथ्यों एवं सत्यों की अत्यन्त संक्षिप्त काव्यात्मक अभिव्यक्ति सूक्तियां कहलाती है। सूक्ति का अर्थ है सुन्दर उक्ति - सु + उक्ति। कोई भी संक्षिप्त काव्यात्मक स्वरूप सूक्ति नहीं हो सकती। उसके लिए जीवनोपयोगी या समाजोपयोगी होना अनिवार्य है। इसे सुभाषित भी कहा जाता है। - उदाहरणार्थ -

करत-करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात से सिल पर परत निसान॥ इसमें निरन्तर अभ्यास की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है।

(iii) क्षणिकाएं - हृदय को चमत्कृत कर देने वाली क्षणिक घटना या स्थितियों को ~~संक्षिप्त~~ संक्षेप में चित्रित कर देने वाली रचना क्षणिकाएं के अन्तर्गत आती है।

क्षणिकाओं की अनुभूति क्षणिक होती है टिकाऊ नहीं होती। इसमें चमत्कार की प्रधानता होती है। साथ ही विषय की कोई सीमा नहीं होती।

सच पूछा जाये तो मुक्तक काव्य की सीमा असीम होती है। सूर की पदावली, कबीर के दोहे बिहारी सतसई जैसी रचनाएँ मुक्तक काव्य के ही अन्तर्गत आती हैं। थोड़ा आगे बढ़कर कहें तो प्रबंधकाव्य के अतिरिक्त जितने भी काव्य रूप हैं सब मुक्तक हैं।